प्रदेश में तिल की खेती मुख्यतः बुन्देलखण्ड की राकड़ भूमि में तथा मिर्जापुर, सोनभद्र, कानपुर, इलाहाबाद, फतेहपुर, आगरा, मैनपुरी आदि जनपदों में शुद्ध एवं मिश्रित रूप से की जाती है। मैदानी क्षेत्रों में अधिकतर इसे ज्वार, बाजरा तथा अरहर के साथ ही बोते हैं। तिल के अन्तर्गत शुद्ध क्षेत्रफल, सिंचित क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता के विगत 5 वर्षों के आंकड़े परिशिष्ट-2 में दिये गये हैं।

तिल की उत्पादकता बहुत कम है जिसे निम्नलिखित सघन पद्धतियां अपनाकर बढ़ाया जा सकता है।

1. उन्नतिशील प्रजातियां

प्रजाति	विशेषता	पकने की अवधि (दिनों में)	तेल प्रतिशत	उपज (कु./हे.)	उपयुक्त क्षेत्र
टा-4	फलियां एकल, सन्मुखी बीज सफेद	90-100	40-42	6-7	मैदानी क्षेत्र
टा-12	फलियां एकल, असन्मुखी बीज सफेद	85-90	40-45	5-6	मध्य एवं पश्चिमीक्षेत्र
टा-13	फलियां एकल, असन्मुखी बीज सफेद	90-95	40-45	6-7	बुन्देलखण्ड क्षेत्र
टा-78	फलियां एकल, सन्मुखी	80-85	45-48	6-8	सम्पूर्ण उ.प्र.
शेखर	फलियां एकल, सन्मुखी	80-85	45-48	6-8	सम्पूर्ण उ.प्र.
प्रगति	फलियां एकल, असन्मुखी	80-85	45-48	7-9	सम्पूर्ण उ.प्र.
तरूण	फलियां एकल, असन्मुखी	80-85	50-52	8-9	सम्पूर्ण उ.प्र.

2. बीज दर तथा शोधन : एक हेक्टर क्षेत्र के लिए 3 से 4 कि.ग्रा. बीज का प्रयोग करें। बीज जनित रोगों से बचाव हेतु 2.50 ग्राम थीरम या 200 ग्रा. काबन्डाजिम 50% डब्लू0पी0 प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधन हेतु प्रयोग करें।

3. बुवाई का समय एवं विधि : पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जुलाई का दूसरा पखवारा उपयुक्त है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इससे पूर्व बुवाई करने से फाइलोडी रोग लगने का भय रहता है। इसकी बुवाई हल के पीछे लाइनों में 30 से 45 से.मी. की दूरी पर करें। बीज को कम गहराई पर बोयें। बुन्देलखण्ड में बुवाई का उपयुक्त समय जून का अन्तिम सप्ताह है।

4. संतुलित उर्वरकों का प्रयोग : उर्वरकों का प्रयोग भूमि परीक्षण के आधार पर करें। यदि परीक्षण न कराया गया हो तो 30 कि.ग्रा. नत्रजन तथा 15 कि.ग्रा. फास्फोरस तथा 25 कि.ग्रा. गन्धक प्रति हे. की दर से प्रयोग करें। राकड़ तथा भूड़ भूमि में 15 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हे. का भी प्रयोग करें। नत्रजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस, पोटाश तथा गंधक की पूरी मात्रा, बुवाई के समय बेसल ड्रेसिंग के रूप में तथा नत्रजन की शेष आधी मात्रा प्रथम निराई-गुड़ाई के समय प्रयोग करें।

5. निराई - गुड़ाई : प्रथम निराई गुड़ाई बुवाई के 15 से 20 दिनों बाद दूसरी निराई गुड़ाई 30 से 35 दिनों बाद करे। निराई-गुड़ाई करते समय पौधों की थिनिंग (विरलीकरण) करके उनकी आपस की दूरी 10 से 12 से.मी. कर लें। एलाक्लोर

50 ई.सी. 1.25 लीटर प्रति हे. बुवाई के 3 दिन के अंदर प्रयोग करने से खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है।

6. सिंचाई : जब पौधों में 50 से 60 प्रतिशत तक फली लग जाय और उस समय वर्षा न हो तो एक सिंचाई करना आवश्यक है।

फसल सुरक्षा : कीट :

1. पत्ती लपेटक व फलीबेधक :

पहचान : इनकी सूंड़ियां कोमल पत्तियों तथा फलियों को खाती हैं एवं इन्हें जाला बनाकर बांध देती हैं।

उपचार : इस कीट की रोकथाम के लिए निम्न में से कोई एक कीटनाशक का बुरकाव अथवा छिड़काव करना चाहिए।

1. क्यूनालफास 25 ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हैक्टर या
2. मिथाइल पैराथियान 2 प्रतिशत चूर्ण 25 कि.ग्रा./हे.

रोग :

2. तिल की फाइलोडी :

पहचान : यह रोग माइकोप्लाज्मा द्वारा होता है। इस रोग में पौधों का पुष्प विन्यास पत्तियों के विकृत रूप में बदलकर गुच्छेदार हो जाता है। इस रोग का वाहक कीट फुदका है।

उपचार :

1. तिल की बुवाई समय से पहले न की जाय।
2. बुवाई के समय कूंड़ में फोरेट 10 जी. 15 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग किया जाय।

   अथवा

3. मिथाइल-ओ-डिमेटान (25 ई.सी.) 1 लीटर प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

3. फाइटोफ्थोरा झुलसा :

पहचान : इस रोग में पौधों के कोमल भाग व पत्तियां झुलस जाती हैं।

उपचार : इसकी रोकथाम हेतु 3 कि.ग्रा. कापर आक्सीक्लोराइड या 2.5 किग्रा. मैकोजेब प्रति हे. की दर से आवश्यकतानुसार छिड़काव दो-तीन बार करना चाहिए।

मुख्य बिन्दु :

1 बुवाई 10-20 जुलाई तक अवश्य कर ली जाये।
2 पानी के निकास की समुचित व्यवस्था करें।
3 बुवाई के 15-20 दिन बाद विरलीकरण अवश्य करें।
4 25 किग्रा./हें गंधक (जिंक सल्फेट) का प्रयोग किया जाय।